विचार बिन्दु

मासिक वेतन पूरनमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। –प्रेमचंद

पुरानी पेंशन बनाम नई पेंशन अथवा नेशनल पेंशन

लम्बे समय से यदा-कदा नई पेंशन के विरोध में पेंशन योग्य पदों पर नियुक्त सरकारी व् अर्धसरकारी कर्मचारिओं के बीच यह मुद्दा चर्चा का विषय रहा है। विगत एक वर्ष से इस मसले ने अब देश व्यापी रुख अपना लिया है और लगभग प्रत्येक प्रान्त में पुरानी पेंशन वापिस बहाल करने की मांग अब जोर पकड़ चुकी है। इसी बीच कुछ राज्यों में वहां की सरकार ने पुरानी पेंशन बहाल करने का निर्णय भी ले लिया है।

राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री ने भी इस वाजिव और कर्मचारी हित को देखते हुए पुरानी पेंशन को दो माह पूर्व बहाल कर केंद्र से नई पेंशन में जमा की गई धन राशि को राज्य को वापिस लौटाने का अनुरोध कर दिया। परन्तु ऐसा सुना गया है कि वापिस लौटाने को यह कह कर मना कर दिया कि नई पेंशन के नियमों में जमा राशि लौटाने का कोई नियम ही नहीं है।

मेरे आंकलन के अनुसार जमा राशि का विथड्रॉल या निकासी का नियम इसलिए केंद्र ने नहीं डाला क्योंकि उन्हे पता था कि ऐसी स्तिथि आने पर सरकार उस सम्पूर्ण धन राशि को जप्त कर सके। नई पेंशन स्कीम 2004 से सरकारों ने लागू करदी। इस पर कर्मचारिओं के मध्य कोई सम्बाद भी नहीं हुआ और न ही इसके हानि लाभ से कर्मचारिओं को अवगत कराया गया।

इस प्रकार यह पेंशन योजना एक नादिर शाही आदेश से कर्मचारिओं पर थोप दी गई।

राज्यों को भी उस समय समझा दिया गया कि इससे राजकोष पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा अर्थात कर्मचारिओं की पेंशन पर राज्य का कोई खर्चा नहीं होगा और इससे जो धन की बचत होगी उसे अन्य कार्यों में अथवा माननिओं की अनुशंसा अनुसार खर्चा किया जायगा। अत: नई पेंशन स्कीम लागू करते समय चाहे कोई सरकार रही हो, नादिरशाही सोच की आकांक्षा सरकार के मन में बलवती थी।

आगे के वर्णन में पाठकों को बताने का प्रयास करूंगा, कि नई पेंशन के केवल दो प्रावधान (एक कटौती की राशि को कम्पनिओं में शेयर और म्यूच्यूअल फण्ड के माध्यम से सरकार इन्वेस्ट करेगी और कहाँ और कितना करेगी इसके लिए एक रेगुलेटरी बोर्ड इस पर नज़र रखेगा। पाठकों को बता दें कि सभी बड़ी कम्पनिओं के म्यूच्यूअल फण्ड भी एक नहीं लगभग 30 कम्पनिओं में अलग-अलग प्रतिशत के हिसाब से जमा फण्ड इन्वेस्ट करते हैं और उन कम्पनिओं पर फण्ड रेगुलेटर का तथाकथित सुपर विज़न भी रहता है। पर यह विज़न सुपर होता है अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता? लेकिन सच यही है कि अधिकांश म्यूच्यूअल फण्ड अपेक्षा पर खरे नहीं ठहरते और संतोषजनक लाभ इन्वेस्टर्स को नहीं दे पाते। वहीं अन्य कुछ म्यूच्यूअल फंडों में तो तीन-चार साल तक डिविडेंड नहीं मिलने पर रिडेम्पशन पर जमाकर्ता को मूल धन भी वापिस नहीं होता। लेखक ऐसे अनेक फंडों का भुक्तभोगी रहा है जब वर्षों बाद आखिर में मूल धन भी वापिस नहीं हुआ। ऐसे प्रकरण साबित करने के लिये डॉक्यूमेंट मौजूद हैं।

मैंने सभी म्युचुअल फंडों में आखिर में बंद करते समय लगभग एक लाख रुपये गवाएं जब कि सभी फंडों में एक्सपर्ट की सलाह से ही इन्वेस्ट किया था, फिर भी हानि, ऐसा क्यों? यहाँ मेरा बड़ा सबाल कि नई पेंशन की कटौती की राशि क्या अमरीका अथवा अन्य किसी विकसित देश में इन्वेस्ट होगी और क्या फण्ड रेगुलेटर विदेशी होगें? मुझे याद है यु एस 64 स्कीम जिसमे मैं भी एक छोटा इन्वेस्टर था। आखिर में स्कीम ऐसी डूबी कि जमाकर्ताओं को अपनी मूल राशि लेने के भी देने पड़ गए। अंत में केंद्र सरकार ने वित्तीय मदद कर जमा कर्ताओं को कुछ उबारा। यह स्कीम भी भारतीय स्टेट बैंक के माध्यम से ही चालू की गयी थी।

कर्मचारी को पेंशन प्रावधान एक डेफर्ड सैलरी है जो सरकार की नियमावली में भी है और सुप्रीम कोर्ट भी अनेक बार यह व्यवस्था दे चुका है। फिर केंद्र सरकार ने केवल यह ही व्यवस्था मिटाने की क्यों सोची? और भी अनेक मद हैं जहाँ किसी का जीवन अंधकारमय किये बिना परिवर्तन किये जा सकते हैं। यदि केंद्र में वांछित वित्त सलाहकारों की कमी है तो जनरल पब्लिक से कॉन्ट्रैक्ट पर उपयोगी सुझाव मिल सकते हैं। लेकिन अभी जयपुर आये अहलुवालीया अपनी तथाकथित वित्तीय योग्यता का ऐसा परिचय दे गए जो कोई भविष्य वक्ता ही देता तो ठीक होता। उनका कथन कि 'पुरानी पेंशन से राज्य दस वर्ष में कंगाल हो जायेगा।' वाह, क्या ज्योतिषी मिला देश को, यही कहा जा सकता है। मैं राजस्थान के मुख्यमंत्री की प्रशंसा करता हूँ कि उन्होंने श्री अहलुवालीया के स्टेटमेंट को यह कहकर वहीं ख़ारिज कर दिया कि नई पेंशन से कर्मचारिओं का भविष्य सुरक्षित नहीं रह सकता और उन्होंने अपने निर्णय अर्थात पुरानी पेंशन को ही सही माना। मुख्यमंत्री जी के विवेक को साधुवाद।

कर्मचारी को पेंशन प्रावधान एक डेफर्ड सैलरी है जो सरकार की नियमावली में भी है और सुप्रीम कोर्ट भी अनेक बार यह व्यवस्था दे चुका है। फिर केंद्र सरकार ने केवल यह ही व्यवस्था मिटाने की क्यों सोची? और भी अनेक मद हैं जहाँ किसी का जीवन अंधकारमय किये बिना परिवर्तन किये जा सकते हैं।

सरकारी ऑफिसर्स और अन्य कर्मचारिओं में एक चूसक वर्ग सदैव रहा है जो जन कल्याण के लगभग सभी नए प्रकल्पों में बाधा रहा है, चाहे अनुचित टिप्पणी लिखकर ; फाइल को अधिक दिनों तक अटकाए रख कर अथवा बिना टिप्पणी के भेज देना, अथवा कभी कभी मुट्ठी गरम होने की आशा में छुट्टी लेकर बैठ जाना आदि। ऐसा होने के दो प्रमुख कारण हैं जवाव देही का न होना और सचिव स्तर के अधिकारी का ढुल मुल रवैया।

अभी कुछ ही दिनों में वार्षिक बजट आने वाला है उसमे जनता को साफ़ दिख जायेगा कि उनकी सरकार कितनी जन हितेषी है? पहाड़ों पर रेल बिछाना क्या विकास है और यदि है तो किसके लिए?

सारांश में नई पेंशन की खूबियां यदि पाठकों को बताएं तो यह कहना उचित होगा कि नई पेंशन में सेवानिवृति पर कर्मचारी को न्यूनतम कितनी पेंशन मिलेगी, आखिरी वेतन की कितने प्रतिशत? कोई नहीं बता सकता और सरकार में जिन्होंने यह योजना बनाई और लागू करवाई वे भी इसका आंकलन नहीं कर सकते? और फिर क्या वेतन संशोधन होने पर पेंशन का संशोधन भी होगा? बेसिक पेंशन पर क्या मेहंगाई भत्ता मिलेगा? और क्या यह भत्ता महंगाई सूचकांक बढ़ने पर सेवारत कर्मचारिओं की भांति बढ़ाया जावेगा अथवा नहीं? क्या पेंशनर की मृत्यु होने पर पारवारिक पेंशन उसके आश्रितों को मिलगी अथवा नहीं, यदि मिलेगी तो किस आधार पर?

यदि नयी पेंशन का धन किसी समय मार्केट के धरातल के नीचे चला जाय तो पेंशन कहाँ से मिलेगी और कितनी केंद्र सरकार से अनुरोध है कि ऐसे सभी संशयों को स्पष्ट कर जनता में सरकार की पारदर्शिता का उदाहरण प्रस्तुत करने का कष्ट करे।

यदि सरकार नहीं कर सकती तो अविलम्ब पुरानी पेंशन बहाल करे और नई पेंशन में जमा कटौती की राशि सम्बंधित राज्यों को लाभ सहित लौटाएं। ऐसा करने पर जमा राशि पर उपार्जित लाभ विगत 18 वर्षों में कितना हुआ का भी आंकलन सुगमता से हो जायेगा। इसमें देरी सरकार को भारी पड़ सकती है? इसलिए समय से कदम उठाना वांछित होगा।

पेंशन से केवल एक व्यक्ति ही प्रभावित नहीं होता अपितु एक परिवार और उससे जुड़े व्यवसायी भी प्रभावित होते हैं। ऐसे में किसी को अन्धकार और अनिश्चित्ता में रखना न तो न्यायोचित है और न ही बुद्धिमानी। संकुचित विचार धारा वालों से सरकार दूरी बनाये क्योंकि ऐसे लोगों का उद्देश्य कुछ और ही होता है, सरकार और जनता का हित नहीं। अखबार वाले सभी बिके रहते हैं इसके प्रमाण का उल्लेख में लेख में पहले ही कर चुका हूँ।

अखबारों ने श्री अहलुवालीया जी का व्यान कि ; पुरानी पेंशन से राज्य दस वर्षों में कंगाल हो जायेगा ; समय उपरांत जनता देखेगी कि एक पूर्व अर्थशास्त्री की भविष्यवाणी सही होती है अथवा नहीं? यहाँ मैं केंद्र और सभी सरकारों से अनुरोध करता हूँ कि इस तथाकथित अर्थशास्त्री की भविष्यवाणी सही होती है अथवा नहीं, उनके सभी अखबारों में छपे कथन को सुरक्षित कर देश की लाइब्रेरी या आर्कईव में रखवा दें। मुख्य मंत्रिओं को आंकलन करना है कि उन्हे जनता का अनहित चाहिए अथवा सरकार का स्थायुत्व?

एक अन्य विडिओ से अभी मालूम हुआ कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी श्री आदित्यनाथ जी भी इस पेंशन मसले पर विचलित हैं। वे एक साधू हैं और कुशल प्रशासक भी, यह साबित हो चुका है। मैं कह सकता हूँ कि वे बिना किसी तरफ देखे अपने विवेक से उचित निर्णय उचित समय पर लेने में सक्षम होंगे।

पाठकों को मैं स्पष्ट कर दूँ कि नई पेंशन से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है लेकिन मैं सदैव जनोपयोगी मुद्दों पर अपनी सोच अनुभव के साथ पाठकों से साझा करता रहा हूँ। नई पेंशन स्कीम पर यह लेख भी इसी अभिप्राय की पुष्टि है अन्य कुछ भी नहीं। किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं गरीब जनता के हितों पर कुठाराघात मुझे सहन नहीं। फिर भी किसी को ठेस पहुंचे उनसे क्षमा याचना।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर-राज.)

महिला उद्यमियों के लिए वरदान है पैच वर्क कला

पन्नालाल मेघवाल

पुराने जमाने में बूढ़ी नानी-दादी फुर्सत के क्षणों में बातों ही बातों में नन्हीं-नन्हीं कतरनों को सहेज कर रखी पोटलियाँ खोलती और प्राय: चादरें, गुदड़ियाँ, लँहगे-ओढ़नी या तकिये के कवर इत्यादि पर पेचवर्क का काम शुरू कर देती थी। चन्द चुनींदा कपड़ों की अनुपयोगी रंग-बिरंगी कतरनें, बारीक-सी सुई और भिन्न-भिन्न कतरनों से मेल खाता धागा-बस यहीं से बूढ़ी दादी, नानी की कल्पना से पेचवर्क का काम खिल उठता था। आज भी गाँवों की ग्रामीण महिलाएँ यही सब करती हैं और छोटी-छोटी बालिकाएँ भी खेल-खेल में ही इसमें प्रशिक्षित हो जाती हैं।

आधुनिक युग में पेचवर्क से सज्जित आधुनिक पोशाकों के डिजाइन परम्परागत शैली में ही बनाये जाते हैं, जैसे-फूल के पेचवर्क में यदि पँखुडिया चिपकाई जाती थी तो वर्षो तक यही परम्परा बनी रही। सिंथेटिक वस्त्रों का प्रचलन आया जिसके अनुरूप अब टेरीकॉट, पॉपलीन, टेरीवायल और अब तो आरकन्डी पर भी पेचवर्क होने लगा है। साथ ही पेचवर्क की फलक पर डिजाइनें भी पारम्परिक न रहकर मॉडर्न आर्ट पेचवर्क में बदल गये हैं। अब आरी-तारी या मुकेश का काम भी पेचवर्क के साथ ही मिश्रित होने लगा हैं जिससे पोशाक में जहाँ चमक-दमक आती हैं वहीं व्यक्तित्व के निखार में भी वृद्धि होती है।

प्राचीनकाल के पारम्परिक कलीदार कुरतों का स्थान अब घेर-घुमावदार अंगरखों ने ले लिया या फिर आठकली के कुरतों का भी खूब प्रचलन है। हल्की गुलाबी साँझ के लिए यह सुखद पोशाक है इसमें हल्की आरी-तारी या मुकेश का पेचवर्क युक्त काम व्यक्तित्व को निखार कर और अधिक आकर्षक बनाता है। टसर सूट आरम्भिक जाड़ों के लिए सुन्दर व उपयोगी होते हैं। पोशाकों, साड़ियों एवं दुपट्टों पर आकर्षक पेचवर्क किया जाता है। पोशाकों का मूल्य निर्धारण पोशाक के वस्त्र तथा उस पर किये गये पेचवर्क के काम पर निर्भर होता है। पेचवर्क में केसमेन्ट बेड-शीट, टेबल मेट एवं डीनर सेट भी बनाए जाते हैं।

श्रीनाथ जी की फलक, गणेशजी, राधा-कृष्ण के अलावा बेड कवर, सोफा कवर, टेबलक्लाथ, कुशनकवर, सलवार सूट आदि भी बडे आकर्षक बनाये जाते हैं। पेचवर्क से सज्जित इन वस्तुओं को आम जनता बड़े चाव से खरीदती है। पेचवर्क का काम आधुनिक या नवीन नहीं है। सदियों से यह काम

पारम्परिक और पुश्तैनी धंधे के रूप में अनेकों प्रदेशों में होता आया है।

औद्योगिकरण के बावजूद आज भी अधिकांश प्रदेशों में वहाँ का महिला वर्ग पेचवर्क से पूर्णत: जुड़ा होकर स्वतंत्र रूप से व्यवयाय में संलग्न हैं। घरेलू हस्तकला की शुद्ध पारम्परिक शैली के माध्यम सुई-धागे से सम्पन्न इस कला के प्रति लोगों की बढ़ती रूचि से जहाँ इस कला क्षेत्र को बल मिला वहीं रोजगार के द्वार भी खुले हैं। भिन्न-भिन्न प्रदेशों में समय-समय पर आयोजित होने वाली प्रदर्शनियों एवं घर-घर खुलते बुटिक के कारण भी पेचवर्क कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ।

आधुनिक युग में पेचवर्क पर महिलाओं का एकाधिपत्य होने से समाज में आर्थिक रूप से पिछड़ी महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय बदलाव आया है। बाजार में इस कार्य की माँग होने से महिलाओं को घर बैठे ही आर्डर मिल जाते हैं। अनेकों असहाय और विधवा महिलाएँ आज पेचवर्क के जरिये समाज में स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करते हुए अपने नौनिहालों के लिए अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य और सुन्दर भविष्य का स्वप्न साकार कर रहीं हैं। पेचवर्क कला महिला उद्यमियों के लिए वरदान साबित हो रही है।

आत्मविश्वास निष्ठा और लगन से श्रम करती इन महिलाओं को पेचवर्क उद्योग सम्बन्धी कोई अलग से संगठन तो नहीं हैं किन्तु कई प्रदेशों में आज भी इन कला धर्मियों ने जहाँ पेचवर्क जैसी पारम्परिक और विशिष्ट कला को विलुप्त होने से बचाया है वहीं पुश्तैनी कला का आधुनिक या मॉडर्न आर्ट के साथ खूबसूरत समन्वय व संयोजन द्वारा विश्व में पेचपर्क को विशिष्ट स्थान दिलवाया है। चाहे अलीगढ की पट्टी का काम हो, जयपुर की पेचवर्क निर्मित विल्हण चम्पावती हो, अजमेर-किशनगढ स्थित तिलोनिया का सुप्रसिद्ध पेचवर्क हो या उडीसा के पीपली गाँव की मनमोहक एप्लिक आर्ट हो जिसकी स्थापना भगवान जगन्नाथजी की स्थापना के साथ हुई थी, पेचवर्क के सजीले, चटकीले, इन्द्रधनुषी रंग आज सम्पूर्ण विश्व को मोहित कर रहे हैं।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

17 साल बाद बालिका वधु "सोनू" को बाल विवाह से छुटकारा मिला

- **बाल विवाह निरस्त की मुहिम के चलते सोनू के परिजनों व डॉ .कृति को भी कई धमकियों का सामना करना पड़ा**
- **सारथी ट्रस्ट से संपर्क कर कोर्ट में गुहार लगाई थी**
- **सोनू का बाल विवाह 4 वर्ष की उम्र में हो गया था**

जोधपुर, (कासं)। जिले के बिलाडा तहसील के पीथावास गांव निवासी बाल विवाहिता सोनू का बाल विवाह निरस्त हो गया। 17 वर्ष बाद बाल विवाह के निरस्त होने पर सोनू खुश है अब वह अपना भविष्य बनाना चाहती है। सोनू का बाल विवाह 4 वर्ष की उम्र में हो गया था। बचपन में हुई इस शादी को सोनू मानने से इंनकार किया और आखिर उसने सारथी ट्रस्ट से संपर्क कर विवाह के निरस्त करने के लिए कोर्ट में गुहार लगाई ।और सोनू का सपना साकार हो गया।

21 वर्षीय बालिका वधु सोनू का बाल विवाह करीब 17 साल पूर्व लूणी तहसील निवासी युवक के साथ समाज के दबाव में करवा दिया गया था। सोनू की बाल विवाह के समय आयु मात्र 4 साल ही थी। महज 4 साल की मासूम उम्र में बाल विवाह की बेडियों में जकडी बालिका वधु जब सयानी हुई तो पता चला कि उसका विवाह तो छोटी सी उम्र में ही हो गया था। सोनू ने इस विवाह को मानने से इंकार कर दिया। उसने मदद के लिए सारथी ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी व पुनर्वास मनोवैज्ञानिक डॉ. कृति भारती की शरण ली। डॉ. कृति भारती का संबल पाकर न्यायालय में बाल विवाह निरस्त की गुहार लगाई थी।

जिस पर एडीजे न्यायालय (अतिरिक्त प्रभार पारिवारिक न्यायालय) बिलाडा के न्यायाधीश पुखराज गहलोत ने सोनू के 17 साल पहले हुए बाल विवाह को निरस्त कर समाज को कड़ा संदेश दिया। सोनू डॉ. कृति भारती की बाल विवाह निरस्त की मुहिम के चलते सोनू के परिजनों व डॉ .कृति को भी कई धमकियों का सामना करना पडा। एडीजे कोर्ट बिलाडा में बीबीसी 100 वुमन सूची में शामिल सारथी ट्रस्ट की डॉ.कृति भारती ने पैरवी कर बालिका वधु सोनू के बाल विवाह निरस्त के तथ्यों और आयु संबंधी प्रमाणिक दस्तावेजों से अवगत करवाया। जिसके बाद एडीजे कोर्ट बिलाडा के न्यायाधीश पुखराज गहलोत ने सोनू के 17 साल पूर्व महज 4 साल की उम्र में हुए बाल विवाह को निरस्त करने का ऐतिहासिक फैसला सुनाया। जिसके साथ ही बिलाडा न्यायालय का पहला बाल विवाह निरस्त हुआ। न्यायाधीश पुखराज गहलोत ने समाज को बाल विवाह के संबंध में कडा संदेश दिया।

ख्वाजा साहब के 811 वें उर्स का झंडा ऐतिहासिक बुलंद दरवाजे पर चढ़ाया

अजमेर, (कासं)। विश्व प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती के 811वें सालाना उर्स की अनौपचारिक शुरूआत दरगाह के ऐतिहासिक बुलंद दरवाजे पर झंडा पेश करने की रस्म के साथ हो गई है।

- **तोपों की गर्जना और सूफियाना कलामों के साथ ख्वाजा साहब के उर्स की अनौपचारिक शुरुआत**
- **भीलवाड़ा के लाल मोहम्मद गौरी के पोते फखरुद्दीन ने झंडे की रस्म अदा कर घोषणा की**

अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह के बुलंद दरवाजे पर उर्स का झंडा चढ़ाया गया। इस दौरान दरगाह परिसर में अकीदतमंदों का जनसैलाब उमड़ा।

भीलवाड़ा के लाल मोहम्मद गौरी के पोते फखरुद्दीन ने दरगाह शरीफ के 85 फीट ऊंचे बुलंद दरवाजे पर झंडे की रस्म अदा कर इसकी घोषणा की। ख्वाजा साहब के उर्स में झंडे की रस्म अदा करने के लिए गरीब नवाज गेस्ट हाउस से झंडे का जुलूस रवाना हुआ जो दरगाह पहुंच संपन्न हुआ, इसके साथ ख्वाजा साहब के उर्स की अनौपचारिक शुरुआत हुई। झंडे की रस्म के दौरान दरगाह परिसर में अकीदतमंदों को हुजूम उमड़ पड़ा।

दरगाह के खादिम सैयद फजले हसन चिश्ती ने बताया कि सदियों पहले संदेश देने का कोई साधन नहीं हुआ करता था, उस समय झंडे चढ़ाकर संदेश दिया जाता था। उर्स में झंडा चढ़ाने की परम्परा अफगानिस्तान के बादशाह ने शुरू की थी, इसके बाद गौरी परिवार नियमित रूप से अपने परिवार के साथ आकर झंडा की रस्म निभाता चला आ रहा है। बुधवार को झंडे का जुलूस गरीब नवाज गेस्ट हाउस से कव्वालियों और बैंड बाजों की सूफियाना धुन पर लंगरखाना गली होते हुए निजाम गेट पहुंचा, दरगाह में प्रवेश कर बुलंद दरवाजे पर संपन्न हुआ। उर्स का झंडा चढ़ाने की रस्म के दौरान बड़े पीर की पहाड़ी से 25 तोपों की सलामी दी गई। इसके बाद फखरूद्दीन गौरी ने बुलंद दरवाजे पर झंडा फहराकर उर्स की रस्म अदायगी की। जुलूस के दौरान पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी भी मौजूद रहे। झंडे की रस्म के दौरान दरगाह परिसर सहित आसपास के क्षेत्र में हजारों की संख्या में अकीदतमंदों का हूजुम उमड़ा पड़ा। जुलूस के दौरान दरगाह की शाही चौकी की कव्वाल द्वारा ख्वाजा साहब की शान में सूफियाना कलाम पेश किए गए, अकीदतमंद ख्वाजा साहब की शान में जयघोष लगाते हुए चल रहे थे, हर कोई ख्वाजा साहब की शान पर अपनी आस्था प्रकट कर रहा था। जिला प्रशासन द्वारा जुलूस के दौरान चाक-चौबंद इंतजाम किए गए, जैसे ही असर की नमाज समाप्त हुई, वैसे ही बैंड बाजों की शुरू हो गई और सूफियाना कलाम की धूनी माहौल में फैलने लगी लो अकीदत के साथ झंडे के ऊपर अपनी आस्था के फूल लुटाते हुए चल रहे थे। बुलंद दरवाजे पर कड़ी सुरक्षा रखी गई, पुलिस के जवानों भीड़ को नियंत्रित करते हुए झंडे को बुलंद दरवाजे पर पहुंचाने की व्यवस्था जुटे थे वहीं मेला मजिस्ट्रेट भावना गर्ग, पुलिस अधीक्षक चूनाराम जाट सहित विभिन्न अधिकारी नजर बनाए हुए थे।

उर्स की अनौपचारिक शुरुआत: बुलंद दरवाजे पर झंडे की रस्म के साथ उर्स की अनौपचारिक शुरुआत हो गई है, अब अकीदतमंद की आवक धीरे-धीरे बढ़ेगी। रजब का चांद दिखने के बाद 22 जनवरी से उर्स की विधिवत शुरू होगी। इसके साथ दरगाह में गरीब नवाज के अकीदतमंद की तादाद बढ़ ती चली जाएगी। उर्स के दौरान विभिन्न रसूमात और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

ख्वाज़ साहब के 811वें में उर्स की अनौपचारिक शुरुआत के साथ ही दरगाह की धार्मिक रस्मों में बदलाव शुरू हो गया। बुधवार को दोपहर में होने वाली खिदमत की रस्म देर शाम 7:45 प्रारंभ हुई वर्षभर ख्वाजा साहब के आस्ताना शरीफ में खादिमों द्वार दोपहर 3 बजे खिदमत की रस्म अदा की जाती है, जैसे ही उर्स की शुरूआत होती है, इस परंपरा में बदलाव हो जाता है, कुल की रस्म अदा होने तक अब खिदमत सायं काल में होगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 19 जनवरी, 2023

माघ मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 3:18 तक, ध्रुव योग रात्रि 11:04 तक, तैतिल करण दिन 1:19 तक, चन्द्रमा आज 3:18 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज प्रदोष व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:18 से 12:37 तक, लाभ-अमृत 12:37 से 3:15 तक, शुभ 4:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:54

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।